महत्वपूर्ण एवं खास

बेटी बचाओ : राजस्थान में बदलाव के बयार

झुंझनू जनता से रिश्ता / वेबडेस्क ! सुशीला थाकन के लिए आठ साल पहले अपनी बड़ी बेटी मनुश्री को अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में भेजना एक सपना था। बेटी को जन्म देने पर उसे नैतिक रूप से पति का साथ तो मिला, लेकिन परिवार के अन्य लोग बेटी होने से खुश नहीं थे। 32 वर्षीय गृहिणी सुशीला ने आईएएनएस को बताया, क्वहर कोई बेटा होने की उम्मीद में था, इसलिए बेटी का पैदा होना परिवार में किसी अपशकुन से कम नहीं था।क्व भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार, राजस्थान के झुंझनू जिले में लिंगानुपात की स्थिति सबसे खराब थी, जहां 1,000 लड़कों पर 863 लड़कियां थीं। इससे न सिर्फ आधिकारिक तौर इसे सामाजिक रूप से पिछड़ा जिला करार दिया गया, बल्कि यह उन बुराइयों का छोटा संसार बन गया, जो भारतीय समाज को रुग्न बनाती है। 2011 की जनगणना में देश में सबसे कम बाल लिंगानुपात राजस्थान में था, जहां 1,000 लड़कों के मुकाबले लड़कियों की संख्या 888 थी, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर 1,000 लड़कों के मुकाबले 919 लड़कियां थीं।प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने एक बार कहा था कि भारत में 4 करोड़ महिलाएं कम हैं और इस लिंगानुपात की कमी में जिला दर जिला सुधार आ रहा है।सुशीला का दावा है कि झुंझनू में भी तेजी से बदलाव आ रहा है। उन्होंने बताया कि बाद में उनको एक बेटा भी हुआ, लेकिन अब परिवार में उनकी बेटी को सबसे ज्यादा लार-प्यार मिलता है, जो इस बात का सूचक है कि समाज बदल रहा है।आज जिले में 1000 लड़कों के तुलना में 951 लड़कियां हैं और यह देश में बाल लिंगानुपात में सुधार के मामले में एक मिसाल है।सुशीला ने कहा, क्वलड़कियों के महत्व के संबंध में क्षेत्र में जागरूकता और शिक्षा के प्रभाव के कारण यह सब हुआ है। प्रदेश सरकार ने लड़कियों के लिए कई योजनाएं शुरू कीं और लिंगानुपात समान बनाने पर जोर दिया। अब भेदभाव बिल्कुल समाप्त हो गया है।क्वहालांकि राजस्थान के इस जिले के लिए लिंगानुपात में सुधार लाने में कामयाबी हासिल करना आसान नहीं था। इस संबंध में जिलाधिकारी दिनेश कुमार यादव ने आईएएनएस को बताया, क्वयह सुधार रातोंरात नहीं आया। सतत प्रक्रिया व सामूहिक प्रयास से यह सफलता मिली है, जिसमें पूर्व जिलाधिकारियों के साथ-साथ महिला कल्याण व स्वास्थ्य विभागों, गैर-सरकारी संस्थाओं (एनजीओ) आदि का बड़ा योगदान रहा है।क्वझुंझनू में यादव का पदस्थापन पिछले ही साल हुआ है। उन्होंने बताया कि लोगों की मानसिकता बदलना कठिन कार्य था। यादव ने कहा, क्वकाम बहुत कठिन था। हमें घर-घर जाकर लोगों को अपनी योजनाओं में शामिल करने के लिए उन्हें तैयार करना था और उदाहरणों के माध्यम से उन्हें समझाना था।क्वयादव ने बताया, क्वझुंझनू की कई लड़कियां सेना में भर्ती हुई हैं और सरकारी अधिकारी बनी हैं।

नोएडा में लावा मोबाइल कंपनी के श्रमिकों ने प्रदर्शन किया

जनता से रिश्ता वेबडेस्क नोएडा सेक्टर-58 स्थित लावा इंटरनेशनल कंपनी के श्रमिकों ने आज वेतन में कटौती तथा प्रबंधकों के दुर्व्यवहार के विरोध में कंपनी के बाहर प्रदर्शन किया। आरोप है कि कंपनी प्रबंधन कर्मचारियों का शोषण करता है। पुलिस उपाधीक्षक (नगर) राजीव कुमार सिंह ने बताया कि सेक्टर-58 स्थित मोबाइल फोन बनाने वाली कंपनी लावा इंटरनेशनल के करीब 600 कर्मचारी आज सुबह से कंपनी के बाहर धरने पर बैठ गये।कर्मचारियों का आरोप है कि उनसे 12 घंटे काम कराया जाता है, लेकिन इसके बावजूद उनके वेतन से पैसे काट लिए जाते हैं।

21 वी सदी की सर्वाधिक सशक्त पार्टी है भाजपा

जनता से रिश्ता वेबडेस्क अप्रेल 1980 को जब भारतीय जनता पार्टी का गठन हुआ तब शायद किसी ने कल्पना भी नहीं की थी यह पार्टी विश्व की राजनीतिक धरा पर विशाल वट-वृक्ष की तरह स्थापित हो जायेगी. गैर-कांगेसी दलों के गठबंधन के रूप में 1977 में उपजी जनता पार्टी के बिखरने से देश में राजनैतिक संकट की स्थिति निर्मित हो गई थी. राजनीति से जनता का विश्वास भंग हो चुका था ऐसे समय में जनसंघ घटक ने जनता पार्टी से अलग होकर भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की. भाजपा के संस्थापक अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी जी ने मुबई में आयोजित पार्टी के प्रथम अधिवेशन में 1980 में कहा था भारत के पश्चिमी घाट को महिमा मंडित करने वाले महानगर के किनारे खड़े होकर मैं यहां भविष्यवाणी करने का साहस करता हूॅ कि अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा. श्री वाजपेयी द्वारा साहस और दृढ़ निश्चय के साथ कहे गये इन शब्दो में पार्टी और देश को नये उजाले की ओर ले जाने का संकल्प प्रतिध्वनित हो रहा था. देश की वर्तमान राजनैतिक स्थिति को देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री वाजपेयी की 38 वर्ष पूर्व की गई भविष्यवाणी पूरी

तरह खरी उतरी है. 1980 से 2018 के सहर में 11 करोड से अधिक सदस्य बनाकर भारतीय जनता पार्टी आज विश्व की सर्वाधिक सदस्य वाली पार्टी बन चुकी है. केंद्र सहित भारत के अधिकांश प्रान्तों में भाजपा की सरकारें है. भाजपा की स्थापना के समय देश में कांग्रेस वर्सेस ऑल का दौर था जो अब पलट कर भाजपा वर्सेस ऑल हो चुका है. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के कुशल नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस का एक एक किला फतह कर समूचे भारत में विजय पताका फहराने की दिशा में अग्रसर है 1980 से अब तक के सफर में भारतीय जनता पार्टी को अनेको बार धूप-छांव का सामना करना किया. इस अवधि में पार्टी ने अनेक झंझावातो का सामना किया तथा असंख्य समर्पित, निष्ठावान एवं जीवट कार्यकर्ताओ की बदौलत प्रतिकूलता को अनुकुलता में तब्दील किया. स्थापना के बाद हुए 1984 के आम चुनाव में भाजपा को मात्र 2 सीटे मिली थी. हालांकि यह तात्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या से उपजी सहानूभूति का नतीजा था. तब भाजपा के विरोधी भाजपा नेताओं पर फब्ती कसते हुए कहते थे हम दो हमारे दो इन फब्तियो की परवाह न करते हुए भाजपा कार्यकर्ताओ ने अटल-अडवाणी के नेतृत्व में अपनी संघर्ष यात्रा को अनवरत् जारी रखा. फलस्वरूप 1989 के आम चुनाव में लोकसभा में भाजपा सांसदों की संख्या दो से बढ़कर 85 हो गई

टीबी से डरकर नहीं डटकर, करें मुकाबला

जनता से रिश्ता / वेबडेस्क हवा के जरिए एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलने वाला ट्यूबरक्लोसिस बैसिलि (टीबी), दुनिया के सर्वाधिक 10 खतरनाक जानलेवा बीमारियों में से एक है। टीबी का जीवाणु खासकर कुपोषित, कमजोरों को सबसे पहले अपने चपेट में लेता है। 24 मार्च 1882 में जर्मन वैज्ञानिक राबर्ट कोच ने टीबी के जीवाणु खोजने के दावा किया था। इस के खोज के 110 वर्षों के बाद विश्व स्वास्थ संगठन ने टीबी के भयावहता को समझते हुए 24 मार्च को विश्व स्तर पर विश्व टीबी(तपेदिक) दिवस मनाने की घोषणा की। तबसे लेकर निरंतर प्रति वर्ष टीबी को पराजित करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है।विश्व स्वास्थ संगठन ने अपने शोध के आधार पर यह अनुमान लगाया है कि दुनिया का एक तिहाई आबादी मायको बैक्ट्रियम ट्यूबरक्लोसिस बैसिलि नामक जीवाणु से संक्रमित है।विश्व स्वास्थ संगठन के रिपोर्ट के मुताबिक टीबी से प्रतिदिन 4658 लोगों की मौतदुनिया भर में हो जाती है। विकासशील देशों में टीबी संक्रमण से मरने वाले लोगों की संख्या 95 प्रतिशत है। जबकि भारत मेंप्रति 3 मिनट में 2 व्यक्तियों की मौत इस जानलेवा क्षय रोग से हो जाती है।

मनोरोगी अन्य लोगों की सोच पर ध्यान नहीं देते है

जनता से रिश्ता वेबडेस्क टीवी कार्यक्रमों और फिल्मों में मनोरोगियों को अक्सर चालबाज़ बताया जाता है, लेकिन ताज़ा अनुसंधान से पता चलता है कि वे ऐसी कोई चालाकी कर ही नहीं सकते क्योंकि चालबाज़ी के लिए व्यक्ति को यह ध्यान देना ज़रूरी होता है कि अन्य लोग किस ढंग से सोचते हैं और उनकी सोच की तोड़ निकालनी पड़ती है जबकि मनोरोगियों के लिए दूसरों के दृष्टिकोण का कोई अस्तित्व ही नहीं होता।

यह समझने की क्षमता का विकास जीवन के शुरुआती वर्षों में ही हो जाता है कि अन्य लोगों की धारणाएं और अभिमत हमसे अलग हो सकते हैं। इसे क्वदिमाग का सिद्धांत' कहते हैं।

हाल ही में हुए अध्ययन के अनुसार दिमाग के दो घटक होते हैं ङ्क एक प्रकट रूप, जहां हम होशो-हवास में यह विचार करते हैं कि कोई और व्यक्ति क्या सोच रहा है। दूसरा, एक स्वचालित घटक होता है जो हमारे फैसलों को अवचेतन स्तर पर प्रभावित करता है।

प्रकट स्तर पर देखा जाए तो यह जानी-मानी बात है कि मनोरोगी दूसरों का दृष्टिकोण समझने में सामान्य लोगों जैसे हैं। लेकिन येल विश्वविद्यालय की एरिएल बास्किन-सोमर्स और सहयोगियों ने पता लगाया है कि अवचेतन स्तर पर मनोरोगी दूसरों के दृष्टिकोण को समझने में औसत से कमतर होते हैं।

मनोरोगियों को समझने के लिए बास्किन-सोमर्स की टीम ने कनेक्टिकट जेल से 106 कैदियों को चुना। एक सामान्य मानसिक स्वास्थ्य प्रश्नावली के अनुसार 22 कैदी मनोरोगी थे, 28 साफ तौर पर मनोरोगी नहीं थे और अन्य इसके बीच थे।

इसके बाद कैदियों पर एक बिंदु परीक्षण किया गया जिसका उद्देश्य यह जानना था कि वह व्यक्ति दूसरों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखने में कितना सक्षम है। इस परीक्षण में एक कमरे की तस्वीर को देखते हुए दीवारों पर मौजूद बिंदुओं की संख्या बताना था। उस कमरे में एक व्यक्ति की तस्वीर भी थी और जिस तरह वह एक ओर रुख करके खड़ा था, उसके लिए सभी बिंदुओं को देख पाना संभव नहीं था।

इस परीक्षण में होता यह है कि जब वह तस्वीर और परीक्षण दे रहा व्यक्ति दोनों समान संख्या में बिंदु देख पाते हैं, तो व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर देने में लगभग एक सेकंड का समय लेता है। लेकिन अगर वह तस्वीर सभी बिंदुओं को नहीं देख सकती, तो व्यक्ति जवाब देने में थोड़ा ज़्यादा समय लेते हैं। इस प्रभाव को व्यवधान कहते हैं। हम बगैर चेतन स्तर पर विचार किए उस तस्वीर के दृष्टिकोण को ध्यान में ले लेते हैं।

जब गैर-मनोरोगियों पर यह परीक्षण किया गया, तब उस परिस्थिति में उन्हें लगभग 100 मिलीसेकंड अधिक समय लगा जब तस्वीर सभी बिंदुओं को देखने में असमर्थ थी।

'भारत का अच्छा मुसलमान कैसा हो, वाजिब नहीं है कि हिंदू तय करें"

जनता से रिश्ता / वेबडेस्क देश में लिबरल राजनीति और चिंतन का दायरा सिकुड़ तो गया है, लेकिन ख़त्म बिल्कुल नहीं हुआ है. यह भी सच है कि लिबरल बुद्धिजीवी भी अपनी बात बहुत संभलकर कह रहे हैं. सार्वजनिक जीवन में घटती उदारता पर चर्चा तक करना मुश्किल हो गया है.

तकरीबन 17 करोड़ की आबादी वाले मुसलमान और उनके मसलों पर राजनीतिक चर्चा करने का काम अकेले असददुद्दीन ओवैसी पर छोड़ दिया गया है. मुसलमानों का नाम लेने से कांग्रेसी हों या समाजवादी सब कतराने लगे हैं लेकिन पाकिस्तान, चरमपंथी संगठन इस्लामिक स्टेट और आतंकवाद का नाम लेकर मुसलमानों पर निशाना साधने वाले सबसे मुखर हैं.इन दिनों देश के कई गंभीर बुद्धिजीवी इस बहस में शामिल हो गए हैं कि देश के मुसलमानों को कैसा होना चाहिए. उनको कैसा दिखना चाहिए, क्या पहनना चाहिए, क्या खाना चाहिएज्बीफ़ बैन के बाद अब चर्चा अक्सर उनकी दाढ़ी और बुर्क़े पर होने लगी है. नफ़रत को राजनीतिक पूंजी बनाने की कोशिश बहुत वर्षों से चल रही थी जो अब कामयाब होती दिख रही है. माहौल ऐसा बना दिया गया है कि मुसलमान यानी ऐसा व्यक्ति जिसकी इस देश के प्रति निष्ठा संदिग्ध है. 1857 से लेकर 1947 तक देश के लिए जान देने वाले हज़ारों मुसलमानों के बारे में ऐसा माहौल उन लोगों ने बनाया जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई में शामिल न होने का फ़ैसला लिया था. 1947 में पाकिस्तान जाने का विकल्प होने के बावजूद, ये वतन से मुहब्बत ही तो थी और हिंदुओं पर विश्वास था कि लाखों-लाख लोग पाकिस्तान नहीं गए. देशभक्ति का सर्टिफ़िकिट अब हिंदुओं के नेतृत्व का दम भरने वाले संगठनों ने देशभक्ति का प्रमाणपत्र बाँटने का ज़िम्मा अपने ऊपर ले लिया है, दाढ़ी रखने वाला, नमाज़ पढ़ने वाला, टोपी पहनने वाला मुसलमान अपने-आप अयोग्य घोषित हो जाता है. उसे तो एपीजे अब्दुल कलाम के खाँचे में फिट होने वाला मुसलमान चाहिए जो गीता बाँचे और वीणा बजाए लेकिन अपने धर्म के कोई लक्षण ज़ाहिर न होने दे. दूसरी ओर, भजन, कीर्तन, तीर्थयात्रा, धार्मिक जयकारे और तिलक आदि लगाने को देशभक्ति का लक्षण बनाया जा रहा है ।

वास्तु टिप्स

क्यों बुजुर्ग काले धागे को पहनने की सलाह देते हैं

जनता से रिश्ता वेबडेस्क-- अक्सर हमने कई लोगों को कहते सुना है कि नज़र उतारने के लिये काला धागा बाँध लो या काला टीका लगा लो। लेकिन क्या आप इसके पीछे की सचाई को जानते है। आखिर क्यों काले रंग के धागे या टीके को बुरी नज़र से बचने वाला माना जाता हैं। नहीं तो चलिए आज इस लेख में हम इस बारे में बात करते हैं काले रंग को नकारात्मकता का प्रतीक माना जाता है। इसलिये ऐसा माना जाता है की काले रंग में सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा का समावेश अपने में करने की क्षमता रखता है। इसीलिए किसी भी व्यक्ति को विशेषकर बच्चों को काले रंग का धागा हाथ, पैर या गले में बाँधा जाता है ।

अन्ना के अनशन को मुद्दे बनायेंगे अहम

जनता से रिश्ता । वेबडेस्क सात साल बाद अन्ना हजारे फिर अनशन पर हैं। दिल्ली के रामलीला मैदान में 23 मार्च से उन्होंने अपनी सात सूत्रीय मांगों को लेकर दूसरी बार आंदोलन शुरू किया है। सात साल पहले उनके आंदोलन का प्रमुख बिंदु लोकपाल विधेयक था जिसमें वे चाहते थे कि लोकपाल को स्वायत्तता मिले और उसे राजनेताओं के विरूद्ध भ्रष्टाचार की शिकायतों की जांच का अधिकार दिया जाये। पहले तो तत्कालीन यूपीए सरकार तैयार नहीं हुई, लेकिन फिर जब आंदोलन ने व्यापक रूप अख्तियार कर लिया, अन्ना की तबियत बिगड़ने लगी और पूरे देश में अन्ना के समर्थन में लोग निकलकर सामने आ गये तब कहीं जाकर लोकपाल विधेयक पर सहमति बनी और अन्ना का अनशन खत्म हुआ लेकिन कालांतर में लोकपाल का जो स्वरूप सामने आया वह न केवल कमजोर था, बल्कि उसमें कई खामियां और भ्रांतियां भी थीं। लोकपाल की नियुक्ति के प्रारूप को भी बदल दिया गया। परिणाम यह है कि केन्द्र सरकार आज तक लोकपाल की नियुक्ति नहीं कर पाई है। यही नहीं, अनेक राज्यों में भी लोकपाल नहीं है।

हैरत की बात यह है कि जिस बीजेपी ने तब बढ़-चढ़कर अन्ना का साथ दिया था, आज वह सत्ता में है लेकिन उसके नेताओं ने अन्ना से मिलने की जरूरत भी नहीं समझी। उनका तो आरोप है कि पिछले चार सालों में उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को कुल 43 पत्र भेजे पर उन्हें एक का भी जवाब नहीं मिला। सरकार की बेरूखी के बाद वे अब फिर आंदोलन की राह पर हैं। उनके सात सूत्रीय मांग पत्र में लोकपाल विधेयक पारित कर लोकपाल कानून लागू करने, इसे कमजोर करने वाली धारा 44 एवं 63 रद्द करने, केन्द्र और राज्यों में लोकपाल नियुक्त करने, किसानों को उनकी उपज की लागत का ड्योढ़ा दाम देने साठ साल से अधिक आयु के किसानों को मासिक पेंशन देने, कृषि मूल्य आयोग को संवैधानिक दर्जा एवं स्वायत्तता देने और चुनाव सुधारों को लागू करने की मांगें शामिल हैं। इस बार हालांकि अन्ना हजारे के आंदोलन को न सुर्खियां मिली है और न अधिक समर्थन। रामलीला मैदान पर पहले दिन करीब पांच हजार लोग ही पहुंचे। शायद इसीलिए सरकार भी ज्यादा तव्वजो नहीं दे रही है लेकिन जिन मुद्दों को लेकर अन्ना ने आंदोलन शुरू किया है, उनकी उपेक्षा करना किसी भी सरकार की सेहत के लिए ठीक नहीं होगा। यदि अनशन लंबा चला तो पूरी संभावना है कि देश में फिर 2011 का वातावरण बन सकता है। खास तौर पर किसानों का मुद्दा आंदोलन को व्यापक बना सकता है। 2011 और आज के आंदोलन में बड़ा फर्क यह है कि इस बार अन्ना के मंच पर किसी राजनीतिक व्यक्ति के प्रवेश पर मनाही है। इसके लिए बकायदा स्टंप पेपर पर करार कराया जा रहा है कि आंदोलन में शामिल कोई व्यक्ति चुनावी राजनीति में हिस्सा नहीं लेगा और सिर्फ समाज सेवा से नाता रखेगा।

खाना-खजाना

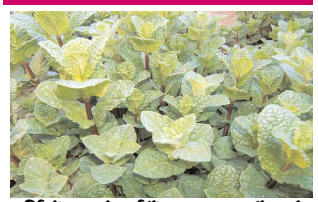

गर्मियों शूरू हो गई हैं, अगर बचना है लू से तो पुदीना है सबसे अच्छा नुस्खा

जनता से रिश्ता वेबडेस्क -- नई दिल्ली। गर्मी में पुदीना सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है। आयुर्वेदाचार्य डॉ जी.सी.भट्ट की मानें तो पुदीने में फाइबर होता है जो कलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करता है और इसमें मौजूद मैग्निशियम आपकी हड्डियों को ताकत देता है। पुदीने का रस 2 चम्मच लेने से जी मिचलाने और उल्टी जैसी समस्या में भी आराम मिलता है। इसके अलावा भी पुदीना कई तरह

चेहरे के धब्बों के लिए

पुदीने की 6 पत्तियां लेकर उसे एक अंडे की सफेदी में झाग आने तक मिलाएं। उसके बाद इसमें आधा चम्मच पिसा हुआ खीरा मिलाएं। अब इस लेप को 15 मिनट तक चेहरे पर लगा रहने दें और फिर ताजे पानी से चेहरा धो लें। दाग-

धब्बे हट जाएंगे

सर्दी-खांसी में फायेदमंद

ऐंटी-इंफ्लमेट्री और ऐंटी-बैक्टीरियल तत्वों के कारण पुदीना श्वास नली में ठंडक पहुंचाता है।